



دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA



सारांश खुतब: जुम: सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद खलीफतुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 25 september, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 25, 1405 हश)

तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) के हवाले से हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अमली नमूने।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 25.09.2026

محله احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

اَقْبَعِدْ عَوْدَ اللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ - بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ - الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - مَا لِكَ يَوْمَ الدِّينِ - إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ - اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ - صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ.

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला, ने फ़रमाया: गुज़श्ता चंद ख़ुल्बात में मैं आँहज़रत ﷺ की सीरत के बयान में तवक्कुल के आला तरीन (उच्चतम) मक़ाम को बयान करता रहा हूँ। इस ज़माने में आप सल्ल. के गुलाम-ए-सादिक़ ने आप सल्ल. के उस्वा (नमूना) के मुताबिक़ उसे किस तरह हमारे लिए बयान किया, क्या तालीम दी, इस पर क्या अमल किया? इस हवाले से आज कुछ कहूँगा।

हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि तवक्कुल यही है कि असबाब (सामान) जो अल्लाह तआला ने किसी काम के हासिल करने के वास्ते मुक़र्रर किए हुए हैं उनको हत्तल-मक़दूर (जहां तक हो सके, यथासम्भव) जमा करो और फिर ख़ुद दुआओं में लग जाओ कि ऐ ख़ुदा! तू ही इसका अंजाम बख़ैर कर। सदहा आफ़ात (कष्ट) हैं और हज़ारों मसाइब (कठिनाई) हैं जो इन कोशिशों को भी बर्बाद और तह-ओ-बाला (उलट पुलट) कर सकते हैं, उनकी दस्तबुर्द (नष्ट) से बचा कर हमें सच्ची कामयाबी और मंज़िल-ए-मक़सूद पर पहुँचा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने तस्रीह (स्पष्ट)फ़र्माई कि असबाब आदमी इस्तेमाल करता है, लेकिन बहुत सारी मुसीबतें ऐसी हैं, ऐसे मौक़े पैदा हो सकते हैं, जहाँ वो असबाब जिन पर दारोमदार होता है, वो तबाह हो जाते हैं। इस लिए अल्लाह तआला से मदद माँगनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमें इनके बुरे असर से बचाए। यह वह हालत है, जिस पर चल कर एक मोमिन अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हासिल करने वाला बन सकता है।

हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद अलै. फ़र्माते हैं- अल्लाह तआला से राज़ी हो जाना हर शख्स का काम नहीं बल्कि यह तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) तबत्तुल (संसार

के मोह से दूर) यानी खुदा की तरफ़ पूरी तवज्जो और रज़ा व तसलीम का आला मक़ाम है जहाँ पहुँच कर इंसान को किसी किसम का शिकवा और शिकायत अपने मौला से नहीं रहती और अल्लाह तआला का अपने बंदे से राज़ी होना,,, यह दारोमदार है बंदे के कमाल-ए-सिदक़ (अत्यंत निष्ठा) व वफ़ादारी और आला दर्जा की पाकीज़गी और तहारत और कमाल-ए-इताअत (अत्यंत आज्ञा पालन) पर जिससे मालूम होता है कि सहाबा ने मअरफ़त और सुलूक के तमाम मदरिज (सारी उन्नति) तय कर लिए थे और सहाबा ने अल्लाह तआला से तअल्लुक़ और तवक्कुल का वो मक़ाम (स्तर) पाया जिसको हमारे लिए नमूना बनाया गया है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़र्माया कि अपने मुत्तबिर्न (अनुयायी) को आप अलै. तवक्कुल की नसीहत हसब-ए-मौक़ा (उचित समय पर) फ़र्माते रहते थे। एक रिवायत में आता है कि हज़रत मास्टर नज़ीर हुसैन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया कि यह न समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है, वो बड़ी ताक़त वाला है, जब उस पर किसी बात में भरोसा करोगे तो वो ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। जैसा कि वो खुद फ़र्माता है: **وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ** (व मँय यतवक्कल अलल्लाहि फ़हुवा हसबुह)। और जो कोई अल्लाह पर तवक्कुल करता है, तो अल्लाह उसके लिए काफ़ी है। सईद लोगों के औसाफ़ (गुण) बयान करते हुए हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि एक मक़ाम, मक़ाम-ए-तवक्कुल है, जिस पर निहायत मज़बूती से उनको क़ाइम किया जाता है और उनके ग़ैर को वह चश्मा-ए-साफ़ी (दूसरों को वह आनन्द) हरगिज़ नहीं मि सकता। बल्कि उन्हीं के लिए वह खुशगवार मुवाफ़िक़ किया जाता है। और नूर-ए-मअरफ़त (ईश्वर में आस्था की आन्तरिक रौशनी) ऐसा उनको थामे रहता है कि वो कई तरह-तरह की बे-सामानी में होकर और असबाब-ए-आदिया (ज़ाहिरी साधनों) से बकुल्ली अपने आपको दूर पा कर फिर भी ऐसी बशाशत (उल्लास/आनंद) और इनशिराह-ए-खातिर (सीने का खुलना) से ज़िंदगी बसर करते हैं और ऐसी खुशहाली से अपने दिनों को काटते हैं कि गोया उनके पास हज़ारों खज़ाने हों। उनके चेहरों पर तवन्नरी यानी दौलतमंद होने की ताज़गी नज़र आती है और दौलतमंद होने की मुस्तक़िल-मिज़ाजी दिखाई देती है और तंगियों की हालत में बकमाल कुशादा-दिली (अत्यंत सीने का खुलना) और यक़ीन-ए-कामिल (पूर्ण आस्था) अपने मौला-ए-करीम पर रखते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला से तअल्लुक़ है, तो तंगियों और तकलीफ़ों में भी अल्लाह तआला पर भरोसा रखते हैं, उससे दूर नहीं जाते। यह नहीं उनको ख़याल आता कि पता नहीं क्या है, क्या नहीं। इब्तिला है या इम्तिहान है या सज़ा है? अगर पूर्ण आस्था अल्लाह तआला पर है, अल्लाह तआला के हकूक़ अदा कर रहे हैं, तो फिर यक़ीनन अल्लाह तआला फ़ज़लों से नवाज़ता है।

आप अलै. फ़र्माते हैं कि तवक्कुल करने वाले और खुदा की तरफ़ झुकने वाले कभी बर्बाद नहीं होते, जो आदमी सिर्फ़ अपनी कोशिशों में रहता है, उसको सिवाए ज़िल्लत के और क्या हासिल हो सकता है? जब से दुनिया पैदा हुई है, हमेशा से सुन्नत-उल्लाह यही चली आती है कि जो लोग दुनिया को छोड़ते हैं, वो इसको पाते हैं, और जो इसके पीछे दौड़ते हैं, वो इससे महरूम रहते हैं। जो लोग खुदा तआला के साथ तअल्लुक़

नहीं रखते, वो अगर चंद रोज़ मक़्र व फ़रेब से कुछ हासिल भी कर लें, तो वो ला-हासिल है। क्योंकि आख़िर इनको सख़्त नाकामयाबी देखनी पड़ती है। इस्लाम में उम्दा लोग वही गुज़रे हैं, जिन्होंने दीन के मुक़ाबले में दुनिया की कुछ परवाह न की।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़र्माया कि जब ख़ुदा तआला पर तवक्कुल ही नहीं और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने का तसव्वुर (प्राथमिकता देने का विचार) ही नहीं, जो हम हर प्रतिज्ञा में दोहराते हैं, ख़ुदाम-उल-अहमदिय्या का इज्तिमा है, उसमें भी दोहराएँगे। तो फिर यह अक़ाइद और ईमान की कमज़ोरी ऐसे शख्स को अगले जहाँ की नेअमतों से भी महसूस रखेगी। इस दुनिया को उन्होंने सब कुछ समझा है और उसे पाने की कोशिश करते रहे हैं, कुछ को मिल गया, कुछ उसको पाने की कोशिश में इस दुनिया से चले गए, नाकाम हो गए, या मिला और उसके बाद बर्बाद हो गया और फिर दुनियावी तौर पर अज़ाब में उन्होंने ज़िंदगी गुज़ारी। न दीन के रहे, न दुनिया के रहे, इस बारे में एक शायर ने यह कहा है कि न ख़ुदा ही मिला न विसाल-ए-सनम (ना प्रिय के दर्शन)!

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सम का नाम ख़ुद मुतवक्किल (भरोसा करने वाला) रखा है चुनाँचे आप फ़र्माते हैं। मसीह के नज़ूल की निशानी यह लिखी है कि दो फ़रिश्तों के परोँ पर उसने अपनी हथेलियाँ रखी हुई होंगी यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि उसका दायाँ और बायाँ हाथ जो तहसील-ए-उलूम-ए-अक़ली (बौद्धिक शिक्षा को पाने) और अनवार-ए-बातिनी (आन्तरिक रौशनी का साधन) है आसमानी मुवक्किलों, जिनके सुपुर्द काम किया जाए यानी फ़रिश्ते हैं उनके सहारे पर होगा। अक़ल के उलूम जो हैं जो अंदरूनी अनवार (आन्तरिक रौशनी) हैं जो मअरफ़त की बातें हैं दीन की, वो इस ज़रीआ से होगा वो फ़रिश्तों की मदद से होगा। इसका यह मतलब है दोनों फ़रिश्तों पर हाथ रखने का। उनके सहारे पर होगा और वो मक़तब (मदरसा) और किताबों और मशाइख़ (सन्यासी) से नहीं बल्कि ख़ुदाए तआला से इल्म-ए-लदुन्नी (विशेष ज्ञान) पाएगा यानी वो इल्म पाएगा जो केवल ख़ुदा तआला सिखाए और उसकी ज़रूरियात-ए-ज़िंदगी का भी ख़ुदा ही मुतवल्ली और मुतकफ़िल होगा जैसा कि अरसा दस साल से आपने फ़र्माया बराहीन-ए-अहमदिय्या की मिसाल दे के उसमें इस आजिज़ की निस्बत यह इल्हाम छप चुका है कि **إِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا سَمِعْتُكَ الْمُتَوَكِّلَ وَعَلَّمْتُهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا** (इन्नका बिआयुनिना सम्मैतुका अल-मुतवक्किला व 'अल्लाम्नाहु मिल लदुन्ना 'इल्मा)। यानी तू हमारी आँखों के सामने है। हमने तेरा नाम मुतवक्किल रखा और अपनी तरफ़ से इल्म सिखाया है।

दुआ और तवक्कुल के मुतअल्लिक आप अलै. ने फ़र्माया कि सारी उक़दा-कुशाइयाँ दुआ से हो जाती हैं। हमारे हाथ में भी अगर किसी की ख़ैर-ख़्वाही है तो क्या है, सिर्फ़ एक दुआ का आला ही है जो ख़ुदा ने हमें दिया है, क्या दोस्त के लिए और क्या दुश्मन के लिए। हम सियाह को सफ़ेद और सफ़ेद को सियाह नहीं कर सकते, हमारे बस में एक ज़र्रा भी नहीं है, मगर जो ख़ुदा हमें अपने फ़ज़ल से अता कर दे। दुआओं की तरफ़ तवज्जो दिलाते हुए और अल्लाह तआला पर तवक्कुल पैदा करने की नसीहत करते हुए आप अलै. फ़र्माते हैं कि इसलाह-ए-नफ़्स के लिए और ख़ातमा बिल-ख़ैर होने के लिए, नेकियों की तौफ़ीक़ पाने के वास्ते दूसरा पहलू दुआ का है, इसमें जिस क़दर तवक्कुल और यक़ीन अल्लाह तआला पर करेगा और उस राह में न थकने वाला क़दम

रखेगा, उसी क्रदर उम्दा नताइज और समरात मिलेंगे। तमाम मुश्किलात दूर हो जाएँगी। और दुआ करने वाला तक्वा के आला महल पर पहुँच जावेगा। आप अलै. के तवक्कुल के पहलू को बयान करते हुए आप अलै. के सीरत-निगार हज़रत शेख याकूब अली साहब इरफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि बा-वजूद इसके कि आप अलै. तैयारी-ए-मुक़द्दमात में पूरी मेहनत और कोशिश फ़र्माते थे, मगर उन असबाब पर आप अलै. कभी भरोसा नहीं करते थे, बल्कि दुआओं से काम लेते थे और हर वक़्त खुदा तआला ही की ज़ात आप अलै. के मददेनज़र रहती थी, वही मअबूद और मक़सूद था और उसी पर तवक्कुल और भरोसा होता था।

एक नसीहत जो अपने एक मुखलिस को आप अलै. ने फ़र्माई, उसका ज़िक्र हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब (रज़ि.) एक रिवायत में करते हैं कि हाफ़िज़ नूर मोहम्मद साहब (रज़ि.) निवासी फ़ैज़ुल्लाह चक ने मुझे तहरीरन बताया कि हाफ़िज़ हामिद अली साहब (रज़ि.) से मैंने यह हवाला सुना था कि हज़रत अक़दस अलै. ने फ़र्माया कि अगर किसी मुक़द्दमे में या और किसी तरह हाकिम के सामने जाना हो, तो जाने से पहले सात मर्तबा सूरह अल-फ़ातिहा पढ़ लेनी चाहिए और सात मर्तबा अपनी उँगली से अपने माथे पर 'या अज़ीज़' लिख लेना चाहिए। इस तरह अल्लाह तआला कामयाबी देता है।

हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब (रज़ि.) इस पर तब्सिरा (टिप्पणी) करते हुए लिखते हैं कि ग़ालिबन हालत-ए-इस्तिग़ाना अन ग़ैरिल्लाह यानी ग़ैरिल्लाह से बे-नियाज़ी और हालत-ए-तवक्कुल अलल्लाह के पैदा करने के लिए आप अलै. ने यह फ़र्माया था।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़र्माया कि तवक्कुल अलल्लाह की अजीब शान है, जो हमें आप अलै. में अपने आक्रा सल्ल. की इत्तिबा (अनुसरण) में हर जगह नज़र आती है। अल्लाह तआला हमें भी तवक्कुल के उच्चतम मइयार (स्तर) हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُحَمَّدٌ هُوَ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَتُؤْمِنُ بِهِ وَتَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَتَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُّضِلِّهِ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيتَاءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَيَذْكُرَنَّ اللّٰهُ الْكَبِيْرَ

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-

9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131